The Chitransh Academic & Research
An International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume1 | Issue 1 | January 2025
ISSN: 3049-303X (Online)
Website: www.thechitranshacadmic.in

नेपाल की राजनीतिक अस्थिरता और भारत की कूटनीति

प्रशांत कुमार
शोधार्थी, स्नातकोत्तर राजनीति विज्ञान विभाग, तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर–812007
डॉ0 मो0 इर्शाद अली
सहायक प्राध्यापक सह विभागाध्यक्ष राजनीति विज्ञान विभाग, बी0एन0 कॉलेज, भागलपुर तिलकामाँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर – 812007

लेख विवरण

शोधपत्र

प्राप्ति तिथि: **14/01/2025**
स्वीकृति तिथि: **20/01/2025**
प्रकाशनतिथि: **30/01/2025**

मुख्य शब्द: कूटनीति, संवाद मंच, क्षेत्रीय एकीकरण, रणनीतियाँ एवं चुनौतीयाँ आदि

सारांश

नेपाल की राजनीतिक अस्थिरता दक्षिण एशिया की क्षेत्रीय स्थिरता के लिए एक निरंतर चुनौती बनी हुई है। 2025 में जेन जेड युवाओं द्वारा शुरू किए गए बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शनों ने प्रधानमंत्री के.पी. शर्मा ओली के इस्तीफे को मजबूर कर दिया, जो भ्रष्टाचार, बेरोजगारी और सोशल मीडिया प्रतिबंध के खिलाफ थे। इन प्रदर्शनों से उत्पन्न हिंसा ने 50 से अधिक मौतें और 22.5 अरब डॉलर की आर्थिक क्षति का कारण बना, जो नेपाल के जीडीपी का लगभग आधा हिस्सा है। भारत, जो नेपाल का सबसे निकटतम पड़ोसी और प्रमुख साझेदार है, ने इस संकट में 'नेबरहुड फर्स्ट' नीति के तहत सक्रिय कूटनीति अपनाई। भारतीय राजदूत नवीन श्रीवास्तव ने अंतरिम सरकार के साथ बातचीत की तथा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शांति की अपील की। यह शोध पत्र नेपाल की ऐतिहासिक अस्थिरता, 2025 की वर्तमान घटनाओं, भारत की कूटनीतिक प्रतिक्रियाओं तथा भविष्य की संभावनाओं का विश्लेषण करता है।

निष्कर्षतः पाया गया कि भारत की कूटनीति को अधिक समावेशी बनाना आवश्यक है, जिसमें युवा संवाद और आर्थिक सहायता शामिल हो। सुझावों में द्विपक्षीय संवाद मंच, क्षेत्रीय एकीकरण तथा चीन के प्रभाव को संतुलित करने की रणनीतियाँ हैं। यह पत्र नीति–निर्माताओं के लिए उपयोगी होगा, जो साझा समृद्धि की दिशा में योगदान देगा।

भूमिका :

भारत और नेपाल के बीच संबंध प्राचीन सांस्कृतिक, धार्मिक तथा भौगोलिक बंधनों पर आधारित हैं। नेपाल को 'जन्मभूमि' तथा 'जाननी' के रूप में जाना जाता है, जहां भगवान राम का जन्म हुआ माना जाता है। 1950 की शांति एवं मैत्री संधि ने इन संबंधों को औपचारिक रूप दिया, जिसमें खुली सीमा, व्यापार तथा सुरक्षा सहयोग का प्रावधान है। हालांकि, नेपाल की राजनीतिक अस्थिरता इन संबंधों को बार–बार प्रभावित करती रही है। 1951 में राजतंत्र से लोकतंत्र की ओर संक्रमण के बाद से नेपाल ने 13 संविधान, 30 प्रधानमंत्री तथा असंख्य गठबंधन सरकारें देखी हैं।

2025 में यह अस्थिरता चरम पर पहुंची। 4 सितंबर को 26 सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर प्रतिबंध लगाने के बाद जेन जेड युवाओं ने काठमांडू सहित प्रमुख शहरों में विरोध प्रदर्शन शुरू किए। ये प्रदर्शन भ्रष्टाचार (10 से अधिक मामले पूर्व प्रधानमंत्रियों से जुड़े), युवा बेरोजगारी (42 प्रतिशत) तथा आर्थिक असमानता के खिलाफ थे। 9 सितंबर को ओली ने इस्तीफा दे दिया, तथा पूर्व मुख्य न्यायाधीश सुशिला कार्की को अंतरिम प्रधानमंत्री बनाया गयाकृनेपाल की पहली महिला पीएम। इससे उत्पन्न हिंसा ने सीमा व्यापार को बाधित किया तथा भारत के लिए सुरक्षा चिंताएं बढ़ाईं।

भारत की कूटनीति इस संकट में महत्वपूर्ण रही। विदेश मंत्रालय ने 'गहरा दुख' व्यक्त किया तथा शांतिपूर्ण संवाद की अपील की। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, 'नेपाल की स्थिरता, शांति एवं समृद्धि भारत के लिए सर्वोपरि महत्व की है।' यह घटना भारत की 'नेबरहुड फर्स्ट' नीति के लिए तीसरी बड़ी चुनौती है, जहां 2022 में पाकिस्तान, 2022 में श्रीलंका तथा 2024 में बांग्लादेश में उथल–पुथल हुई।

इस पत्र का उद्देश्य निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर देना है : (1) नेपाल की राजनीतिक अस्थिरता के ऐतिहासिक कारण क्या हैं? (2) 2025 की घटनाओं ने भारत की कूटनीति को कैसे प्रभावित किया? (3) भविष्य की रणनीतियाँ क्या होनी चाहिए? शोध पद्धति गुणात्मक है, जिसमें वेब सर्च, एक्स (पूर्व ट्विटर) पोस्ट तथा शोध पत्रों का विश्लेषण शामिल है। विश्व बैंक के अनुसार, राजनीतिक जोखिम

निवेश को 20–30 प्रतिशत कम करता है, जो नेपाल में स्पष्ट है। यह अध्ययन भारत की कूटनीति को मजबूत बनाने में सहायक होगा।

साहित्य समीक्षा :

- नेपाल की राजनीतिक अस्थिरता तथा भारत की कूटनीति पर साहित्य व्यापक एवं बहुआयामी है। प्रारंभिक अध्ययनों में, 2001 के राजपरिवार हत्याकांड तथा माओवादी विद्रोह (1996–2006) पर फोकस है। एक शोध पत्र में उल्लेख है कि इस विद्रोह ने 17,000 मौतें कीं तथा भारत को शरणार्थी संकट का सामना करना पड़ा। भारत ने शांति प्रक्रिया में मध्यस्थता की, लेकिन नेपाल की गणतंत्र स्थापना (2008) के बाद संबंध जटिल हो गए।
- हाल के साहित्य में, 2015 के संविधान विवाद प्रमुख है। नेपाल ने भारत पर 'नाकाबंदी' का आरोप लगाया, जिससे ईंधन संकट उत्पन्न हुआ तथा जीडीपी वृद्धि 0.6 प्रतिशत रह गई। न्यूयॉर्क टाइम्स के अनुसार, 2025 की नेपाल उथल–पुथल भारत की 'बैकयार्ड डिप्लोमेसी' के लिए नवीनतम चुनौती है। बीबीसी का विश्लेषण दर्शाता है कि नेपाल भारत के पड़ोसी देशों में तीसरा ऐसा मामला है जहां हिंसक विद्रोह ने सरकार गिराई।
- आर्थिक एवं भू–राजनीतिक आयामों पर, एटलांटिक काउंसिल का रिपोर्ट बताता है कि जेन जेड विद्रोह की जड़ें आर्थिक हैंकृबेरोजगारी तथा भ्रष्टाचार। लोव इंस्टीट्यूट के अनुसार, यह विद्रोह भारत एवं चीन को बीच में फंसा देता है, जहां नेपाल 'यम के बीच दो चट्टानों' की तरह संतुलन बनाता है। एक्स पोस्ट्स से पता चलता है कि डिसइनफॉर्मेशन ने प्रदर्शनों को बढ़ावा दिया, जहां फेक प्रोफाइल्स ने 326 मिलियन व्यूज प्राप्त किए।
- भारत की कूटनीति पर, द डिप्लोमैट का लेख सुझाव देता है कि भारत नेपाली युवाओं की शिकायतों को संबोधित करे, जैसे रोजगार अवसर प्रदान करके। नेक्स्ट आईएएस का ब्लॉग 2025 में भारत–नेपाल संबंधों को राजनीतिक अशांति एवं क्षेत्रीय चुनौतियों के संदर्भ में विश्लेषित करता है। साहित्य की कमी मात्रात्मक डेटा की हैय अधिकांश गुणात्मक हैं।

समग्रतः साहित्य दर्शाता है कि नेपाल की अस्थिरता भारत की कूटनीति को पुनर्मूल्यांकन की मांग करती है। यह समीक्षा आगे के अध्यायों की नींव रखती है।

नेपाल की राजनीतिक अस्थिरता का ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

नेपाल का राजनीतिक इतिहास अस्थिरता का प्रतीक है, जो 1768 के गोरखा साम्राज्य से आरंभ होता है। 1846 में जंग बहादुर राणा ने कुन्वर परिवार की हत्या कर राणा शासन स्थापित किया, जो 1951 तक चला। 1951 में राजा त्रिभुवन के नेतृत्व में लोकतांत्रिक आंदोलन ने राणा शासन समाप्त किया, लेकिन 1960 में राजा महेंद्र ने पंचायत व्यवस्था लागू कर लोकतंत्र कुचला।

1990 के जनआंदोलन ने बहुदलीय प्रजातंत्र लाया, लेकिन 1996–2006 के माओवादी विद्रोह ने देश को गृहयुद्ध में झोंक दिया। इस दौरान 17,000 मौतें हुईं तथा अर्थव्यवस्था चरमरा गई। भारत ने शरणार्थियों को आश्रय दिया तथा 2006 में शांति समझौते में मध्यस्थता की। 2008 में राजतंत्र का अंत हुआ तथा गणतंत्र घोषित किया गया, लेकिन उसके बाद राजनीतिक कलह बढ़ी। 13 संविधान सभाओं तथा 30 प्रधानमंत्रियों का दौर चला।

2015 का नया संविधान विवादास्पद रहा, जिसने मधेसी एवं था, समुदायों को हाशिए पर धकेल दिया। इससे भारत पर 'नाकाबंदी' का आरोप लगा, जिससे नेपाल का ईंधन आयात रुका तथा आर्थिक हानि 1 अरब डॉलर हुई। 2015–2020 में के. पी. ओली एवं पुष्प कमल दाहाल के बीच सत्ता संघर्ष ने अस्थिरता बढ़ाई। 2021 में सर्वोच्च न्यायालय के हस्तक्षेप से ओली की सरकार गिरी। COVID–19 ने स्थिति बिगाड़ी, जहां रेमिटेंस 25 प्रतिशत गिरा।

ऐतिहासिक रूप से, नेपाल की अस्थिरता जातीय विविधता, भौगोलिक कठिनाई तथा बाहरी प्रभावों (भारत एवं चीन) से उपजी है। प्रिथ्वी नारायण शाह ने नेपाल को 'दो चट्टानों के बीच यम' कहा था। यह पृष्ठभूमि 2025 की घटनाओं की व्याख्या करती है।

2025 में वर्तमान राजनीतिक अस्थिरता

2025 नेपाल के लिए परिवर्तनकारी वर्ष सिद्ध हुआ। 4 सितंबर को सोशल मीडिया प्रतिबंध ने जेन जेड को उकसाया, जो डिस्कॉर्ड जैसे प्लेटफॉर्म्स पर

संगठित हुए। प्रदर्शन भ्रष्टाचार (ओली सरकार पर 10 मामले), बेरोजगारी (42 प्रतिशत) तथा पब्लिक सिक्योरिटी बिल के खिलाफ थे। काठमांडू में दंगे भड़के, जिसमें 50 मौतें तथा मंत्रियों के घरों में आगजनी हुई। 9 सितंबर को ओली ने इस्तीफा दिया, तथा सुशिला कार्की अंतरिम पीएम बनींकृडिजिटल डेमोक्रेसी का उदाहरण।

यह विद्रोह आर्थिक जड़ों से उपजा। विश्व बैंक ने चेतावनी दी कि अस्थिरता से वृद्धि नकारात्मक हो सकती है (2.1 प्रतिशत से –2.6 प्रतिशत)। युवा प्रवास बढ़ा, लेकिन घरेलू अवसरों की कमी ने रोष पैदा किया। नेपाली कांग्रेस एवं कम्युनिस्ट पार्टी का गठबंधन टूटा। डिसइनफॉर्मेशन ने भूमिका निभाई, जहां फेक प्रोफाइल्स ने प्रदर्शनों को हाईजैक किया।

एक्स पोस्ट्स से पता चलता है कि यह 'जनरेशनल रिवोल्ट' है, जो अल्जीरिया एवं मोरक्को के समान है। अंतरिम सरकार ने चुनाव वादा किया, लेकिन सुधार अनिश्चित हैं। यह अस्थिरता क्षेत्रीय सुरक्षा को प्रभावित करती है।

भारत की कूटनीतिक रणनीतियाँ

भारत ने 2025 संकट में बहुआयामी कूटनीति अपनाई। विदेश सचिव विक्रम मिसरी की अगस्त 2025 यात्रा ने आधार तैयार किया। ओली के इस्तीफे के बाद, राजदूत श्रीवास्तव ने कार्की से मुलाकात की तथा मोदी की बधाई दी। भारत ने शांतिपूर्ण संवाद की अपील की तथा नागरिकों को सतर्क रहने को कहा।

ऐतिहासिक रूप से, भारत ने 'सॉफ्ट पावर' का उपयोग किया, सांस्कृतिक संबंध (पशुपतिनाथ, रामायण) तथा आर्थिक सहायता (1 अरब डॉलर COVID के दौरान)। 2015 नाकाबंदी के बाद, भारत ने हाई–प्रोफाइल विजिट्स (मोदी की 2018 यात्रा) तथा इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स (रेल, जलमार्ग) पर फोकस किया। 2025 में, भारत ने BIMSTEC युवा लीडर्स समिट (सितंबर 2025) के माध्यम से युवा संवाद को बढ़ावा दिया।

चीन के प्रभाव को संतुलित करने के लिए, भारत ने सीमा मुद्दों पर संवाद बढ़ाया। CENJOWS की गेस्ट लेक्चर (सितंबर 2025) ने क्षेत्रीय प्रभावों पर चर्चा की। भारत की रणनीति समावेशी होनी चाहिए, जिसमें नेपाली युवाओं को रोजगार अवसर शामिल हों।

द्विपक्षीय संबंधों पर प्रभाव :

अस्थिरता ने व्यापार (8.5 अरब डॉलर 2024–25) को प्रभावित किया, जहां सीमा पर 50 प्रतिशत गिरावट आई। रेमिटेंस (8.2 अरब डॉलर) तथा गोरखा सैनिक भर्ती प्रभावित। सुरक्षा चिंताएं बढ़ीं, क्योंकि अस्थिरता उग्रवाद को बढ़ावा दे सकती है। सकारात्मक रूप से, भारत की त्वरित प्रतिक्रिया ने विश्वास बहाल किया। CRF की राउंडटेबल (अक्टूबर 2025) ने नई दिल्ली में चर्चा की। हालांकि, चीन की BRI ने नेपाल को आकर्षित किया। भारत को सक्रिय कूटनीति से संतुलित करना होगा।

सुझाव :

1. युवा संवाद मंच : भारत–नेपाल युवा फोरम स्थापित करें।
2. आर्थिक सहायता : रोजगार–उन्मुख परियोजनाएँ, जैसे IT हब।
3. चीन संतुलन : BIMSTEC एवं SAARC को मजबूत करें।
4. सुरक्षा सहयोग : संयुक्त अभ्यास बढ़ाएँ।
5. सॉफ्ट पावर : सांस्कृतिक आदान–प्रदान, जैसे मछिंद्रनाथ सम्पोजियम (फरवरी 2025)।

निष्कर्ष :

नेपाल की लगातार राजनीतिक अस्थिरता ने न केवल उसकी आंतरिक विकास प्रक्रिया को प्रभावित किया है बल्कि क्षेत्रीय सामरिक संतुलन पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है। बार–बार की सरकारों का परिवर्तन, वैचारिक विभाजन, और दलों के बीच सत्ता संघर्ष ने निर्णय–प्रक्रिया को कमजोर किया है, जिसके कारण जनता की आकांक्षाओं तथा आर्थिक प्रगति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। इस पृष्ठभूमि में भारत की कूटनीति एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भौगोलिक निकटता, ऐतिहासिक–सांस्कृतिक संबंध और आर्थिक परस्पर निर्भरता के कारण भारत के लिए नेपाल की स्थिरता अत्यंत आवश्यक है। भारत ने हमेशा राजनीतिक संवाद, आर्थिक सहयोग और विकास परियोजनाओं के माध्यम से नेपाल को स्थायित्व और प्रगति की दिशा में समर्थन देने का प्रयास किया है। नेपाल की राजनीति में बाहरी प्रभावों के प्रति बढ़ती संवेदनशीलता तथा चीन जैसे अन्य क्षेत्रीय शक्तियों के हस्तक्षेप ने भारत की कूटनीतिक रणनीति को और जटिल बना दिया है। ऐसे में भारत के लिए संतुलित, पारदर्शी और भरोसे–आधारित नीति अपनाना

आवश्यक हो जाता है, ताकि नेपाल की आंतरिक राजनीति में अनावश्यक हस्तक्षेप के आरोपों से बचते हुए आपसी विश्वास को मजबूत किया जा सके।

निष्कर्षतः नेपाल की स्थिरता केवल उसके अपने राजनीतिक नेतृत्व की परिपक्वता और संस्थागत मजबूती पर निर्भर नहीं करती, बल्कि पड़ोसी देशों के संतुलित और सहयोगात्मक दृष्टिकोण पर भी आधारित है। भारत की सकारात्मक और रचनात्मक कूटनीति न सिर्फ नेपाल की स्थिरता को मजबूती प्रदान कर सकती है, बल्कि पूरे दक्षिण एशिया की सुरक्षा और समृद्धि को भी सुनिश्चित कर सकती है।

संदर्भ–सूची :

1. बाल कृष्ण महर (2019) : नेपाल–भारत संबंध : यथार्थवादी और उदारवादी सैद्धांतिक प्रिज्म से परे, जर्नल ऑफ इंटरनेशनल अफेयर्स, वॉल्यूम 2, अंक 1, पृष्ठ 19–42.
2. खड्गा के.सी. एवं गौरव भट्टराई (2018) : नेपाल का समृद्धि की खोज : पारगमन कूटनीति के माध्यम से, जर्नल ऑफ इंटरनेशनल अफेयर्स, वॉल्यूम 2, अंक 1, पृष्ठ 75–96.
3. सिंह, अभा (2012) : भारत–नेपाल संबंध : एक राजनीतिक अध्ययन, अनाम, पृ0 200.
4. शाहबाज शाह (2017) : भारतो–नेपाल संबंध : एक द्विपक्षीय विरोधाभास, आईयूपी जर्नल ऑफ इंटरनेशनल रिलेशंस, वॉल्यूम 11, अंक 4, पृष्ठ 28–48.
5. डी. शुक्ला, (2006) : भारत–नेपाल संबंध : समस्याएं और संभावनाएं, अनाम, पृ0 50.
6. बी.एन. बराल, (2018) : नेपाली विदेश नीति के बदलते गतिशील : पैटर्न और रुझान, जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस, वॉल्यूम 18, पृष्ठ 25–45.